

ISSN : 2321-5569

UGC Care list GROUP 'D' SI No. 57

मधुमती

राजस्थान साहित्य अकादमी, उदयपुर

वर्ष : 65 | अंक : 7 | जुलाई, 2025

मधुमती

जुलाई, 2025



₹ 45

‘आई डोन्ट लाइक यू’ में निहित बाल-मनोविज्ञान और सामाजिक सरोकार

✍ चेताली सिन्हा

जो रिश्ते इंसान के पास होते हैं, वह उसकी कीमत समझ नहीं पाता मगर जब वह समय बीत जाता है और वही रिश्ता दूर हो जाते हैं, तब इंसान को उसकी कद्र होने लगती है। यही इंसान की सबसे बड़ी कमज़ोरी है।

वंदना यादव की सद्यः प्रकाशित पुस्तक ‘आई डोन्टलाइक यू’ एक संस्मरण है। एक ऐसा संस्मरण जिसके केंद्र में है समर (पड़ोस में आया एक अन्य फौजी का बच्चा), जिसके केंद्र में है चूरू, मारुथल, पठानकोट, पिलानी, सेहलंग, गुरुग्राम और पोता स्याणा, जिसके केंद्र में हैं कई प्रकार के पालतू पशु मसलन : भूरिया, पीहू, टाइगर, हनी, पूस एवं रोजर। उपर्युक्त पात्र एवं स्थान इस संस्मरण के मुख्य विषय-वस्तु हैं। शुरुआत के अठारह-उन्नीस पृष्ठ केवल समर नामक उस बच्चे को समर्पित हैं, जिसके प्रायः कहे हुए वाक्य को ही लेखिका ने पुस्तक का नाम दे दिया-‘आई डोन्टलाइक यू’। संस्मरण अर्थात् - ‘सम्यक् स्मृति।’ दरअसल संस्मरण वास्तव में वही कहलाता है जो वर्तमान और अतीत के बीच सेतु का काम करे। संस्मरण न तो सूचना के आधार पर लिखे जा सकते हैं और न ही साक्षी भाव से लिखे जा सकते हैं। जिस सम्यक् स्मृति की बात हम करते हैं दरअसल वह एक ऐसी स्मृति है जो वर्तमान को अधिक सार्थक, समृद्ध तथा संवेदनशील बनाती है।

प्रायः यह मान लिया जाता है कि संस्मरण किसी महान व्यक्ति के ऊपर ही लिखे जाते हैं, जबकि ‘आई डोन्टलाइक यू’ को पढ़ते हुए यह महसूस होता है कि संस्मरण किसी के बारे में भी हो सकता है। बतौर डॉ. अमरनाथ संस्मरण में व्यक्ति संबंध के कारण महत्वपूर्ण हैं, अपनी महानताओं के कारण नहीं। जो संबंध किसी भी

स्तर पर लेखक की ज़िन्दगी को अर्थ देता है, वह संस्मरणीय हो सकता है। यह कथन उक्त संस्मरण के संदर्भ में फिट बैठता है।

वंदना यादव के संस्मरण पर बात करने से पूर्व यह जानना भी रोचक है कि दुनिया का और हिन्दी साहित्य का पहला ज्ञात संस्मरण कौन-सा है। संस्मरण क्यों लिखे जाने लगे? मनुष्य का आविर्भाव जबसे इस पृथ्वी पर हुआ है तबसे उसने धीरे-धीरे सहेजने की प्रक्रिया सीखी। फिर चाहे वह वस्तु हो या स्मृतियाँ। सभी प्राणियों में सर्वाधिक विवेकशील मनुष्य को ही माना जाता है और इसीलिए वह अपनी स्मृतियों को एकत्र कर सकने में सक्षम है। हम जानते हैं कि जब दुनिया में मुद्रित माध्यम का आविष्कार नहीं हुआ था तो लोग किस प्रकार दीवारों पर चित्रों के माध्यम से और संकेतों के माध्यम से एक स्थान से दूसरे स्थान और एक वस्तु से दूसरे वस्तु को पहचानने की कला जानते थे। परंतु जैसे ही छापाखाने का आविष्कार हुआ लोगों ने लिपि का निर्माण भी करना सीखा और धीरे-धीरे उनके ज़रिये अपनी भाषा को भी ईजाद करने लगे। अपनी भाषा को शब्दों में पिरोने लगे। सबसे पहले बाइबिल को प्रचारित करने के लिए ईसाइयों ने इसके पच्चे बड़ी संख्या में प्रकाशित करवाए और उसे घर-घर बाँटने का काम किया। बाइबिल ने भले ही ईसाई धर्म के प्रचार-प्रसार के लिए मुद्रित माध्यम का प्रयोग बहुतायत में किया परंतु यही आगे चलकर साहित्य के लिए वरदान भी साबित हुआ। जर्मनी के गुटेनबर्ग ने जब 1440 में छापाखानेकी स्थापना की, तब उन्हें भी अनेक कठिनाइयों का सामना करना पड़ा लेकिन खुद गुटेनबर्ग ने शायद इतना नहीं सोचा होगा कि उनका यह आविष्कार आगे चलकर साहित्य के जगत में

कितनी बड़ी क्रांति लेकर आया। पुर्तगालियों द्वारा भारत में सबसे पहले गोवा में प्रिंटिंग-प्रेस की स्थापना (1550में) की गई। आहिस्ता-आहिस्ता हमारे सामने कविताएँ, कथा-कहानियाँ और अन्य विधाओं में प्रकाशित रचनाएँ आने लगीं। इन्हीं साहित्यिक विधाओं में संस्मरण भी आया। हालाँकि दुनिया का पहला ज्ञात संस्मरण जूलियस सीज़र द्वारा लिखा हुआ 'गैलिक युद्धों पर टिप्पणियाँ' (Commentarii De Bello Gallico) नाम से 58 से 50 ईसा पूर्व में आता है जो मुद्रण-यंत्र के आविष्कार होने से काफी पहले भी उपलब्ध था। बाद में उनकी टिप्पणियों का प्रकाशन हुआ और मुद्रण यंत्र के आविष्कार होने से ये टिप्पणियाँ और अधिक लोकप्रिय हुआ। यह संस्मरण गैलिक युद्धों का प्रत्यक्ष विवरण है। जूलियस सीज़र न केवल एक रोमन सेनापति थे बल्कि प्रसिद्ध राजनेता भी थे। उसके बाद हमें अर्नेस्ट हेमिंग्वे का 'ए मूवेबलफीस्ट' नामक संस्मरण मिलता है जिसे उन्होंने 1920 में लिखा था। इसका प्रकाशन 1964 में हुआ था। इसमें हेमिंग्वे ने पेरिस में अपने दोस्तों के साथ बिताये पलों को, अपने जीवनानुभवों को साझा किया है।

जहाँ तक हिन्दी साहित्य-जगत में संस्मरण लिखे जाने की बात है तो यहाँ भी काफी समृद्ध परंपरा मिलती है। गद्य साहित्य के अंतर्गत आनेवाले इस विषय को उन्होंने न केवल प्रतिष्ठित किया बल्कि उसे एक स्वतंत्र विधा के रूप में स्थापित भी किया। संस्मरण को स्थापित करने का श्रेय पद्मसिंह शर्मा को जाता है। जिन्होंने सन 1929 में 'पद्य पराग' नाम से संस्मरण लिखा। यह संस्मरण एक मार्मिक संस्मरण माना जाता है, जिसमें उन्होंने सत्यनारायण कविरत्न एवं भीमसेन शर्मा आदि पर संस्मरण लिखे। डॉ. अमरनाथ की माने तो समय-सरिता के दो तटों के बीच संवाद का माध्यम है संस्मरण। इस बात की पुष्टि बनारसी दास चतुर्वेदी से लेकर महादेवी वर्मा तक के संस्मरणों को पढ़कर समझा जा सकता है। महादेवी वर्मा को सर्वाधिक ख्याति इसी विधा में मिली इसमें कोई दो मत नहीं। उनके संस्मरण 'पथ के साथी', 'स्मृति की रेखाएँ' एवं 'मेरा परिवार' में मानवीय मूल्यों की स्थापना

और उनकी संवेदनाओं की पड़ताल की है महादेवी वर्मा ने।

'आई डोन्टलाइक्यू' नामक इस संस्मरण में वंदना यादव ने जिन प्रसंगों को हमारे सामने उजागर किया है वह हमें महादेवी वर्मा के गिल्लू जैसे अनेक पात्रों की याद दिलाता है। 'आई डोन्टलाइक्यू' में भी भूरिया और हनी जैसे पालतू पशुओं की बहुत ही सुंदर और भावनात्मक चित्रण किया है वंदना जी ने। इस संस्मरण की खासियत यह है कि यहाँ जितने भी प्रसंग लेखक ने उठाये हैं उन सब में एक बात सामान्य है और वह है बाल सुलभ मन की भावनाओं का चित्रण। बाल मनोविज्ञान की गहरी समझ और पहचान है लेखिका को। पशुओं के नन्हे बच्चों की छोटी से छोटी हरकतों का, उनकी चंचलता, उनकी मासूमियत और उनकी उदासियों का भी उल्लेख हुआ है इसमें। भूरिया और हनी ये दोनों ऐसे पालतू कुत्ते होते हैं उनके घर में जो उनके लिए रखवाली भी करते हैं और उनका मनोरंजन भी। लेखिका ने लिखा है कि किस प्रकार घर के वट वृक्ष यानि दादा जी के देहातीत हो जाने के बाद हनी का व्यवहार एकदम से बदल जाता है, उसकी चंचलता शांत वृत्ति में बदल जाती है। पशुओं की संवेदना कई बार मनुष्य की संवेदना से भी अधिक मुखर होता है। उसका प्रेम निःस्वार्थ और निश्छल होता है। अपने मालिक के प्रति उसकी ईमानदारी का कोई मोल नहीं, सब कुछ अनमोल होता है उनका।

इस संस्मरण को पढ़ते हुए महसूस होता है कि लेखक की स्मृतियाँ कितनी सजग हैं और ताजी भी। अपने बचपन का कोई भी प्रसंग वह शायद ही भूली हों। चाहे वह भैंस की पीठ पर चढ़ने की बात हो या पापा की बड़ी वाली साइकिल चलाने की बात, काली मिट्टी के लौंदे उठाने का प्रसंग हो या फिर दोपहर को सखियों संग खेलने निकल जाने की बात, तमाम यादें उनके ज़ेहन में किसी सिलाई की हुई लुगदी की तरह पैबस्त हैं। शिक्षित परिवार से तालुक रखने के कारण उनके जीवन में बहुत सारी बातों की मनाही भी रही है लेकिन अपने बचपन को उन्होंने भरपूर जीया। पिताजी के सख्त तेवर के बावजूद लेखिका

ने कई नियम तोड़े, उनका उल्लंघन किया और यह बचपन की, की गई बहुत ही खूबसूरत एवं प्यारी नादानियाँ भी होती हैं जिनकी अवमानना हम और आप सभी कर चुके होते हैं। पिताजी अपने इलाके में एक नामी-गिरामी व्यक्ति रहे हैं, उस कारण भी उनके लिए सामाजिक दबाव अधिक थे, इस बात को लेखिका लिखती भी हैं। लेकिन वह कहती भी हैं कि 'लोग क्या कहेंगे' यही सोच हमें जीवन में रिस्क लेने से रोकता है। ये जो हमारे भीतर का भय है, यही हमें सच और झूठ में भेद करने नहीं देता।

बचपन से ही बोलड रही वंदना जी ने जीवन में हर चुनौती का सामना डटकर किया है। उनके अपने जीवन के भी बहुत अलग किस्म के संघर्ष रहे हैं जो एक अकेली स्त्री के संघर्षों को उजागर करने में सफल हुआ है। फौजी की पत्नी होने के कारण उन्हें अकेले अनेक कार्य स्वयं करने पड़े और वे काम हर बार बहुत थका देनेवाले और परेशान कर देनेवाले होते थे। मसलन बच्चों की देखभाल करना, उन्हें स्कूल एवं छात्रावास में लेने और छोड़ने जाना, घर का सारा काम खुद ही देखना, पैकिंग करना इत्यादि। फौजियों के जीवन में जो अनिश्चितताएँ होती हैं वह एक प्रकार की त्रासदी ही है। हर बार नई जगह जाना, नये घर को बसाना, सजाना-संवारना और फिर अचानक से एक दिन उस जगह को छोड़कर चल देना। सेना की नौकरी में कब कहाँ जाने का फरमान आ जाए, नहीं मालूम। बार-बार तबादले के कारण नौकरी और जीवन दोनों में अस्थिरता आ जाती है, इस बात से इनकार नहीं। कभी मारुथल, कभी पंजाब, कभी पठानकोट, कभी गुरुग्राम, कभी राजस्थान और कभी पिलानी। इन सभी स्थानों पर रहते हुए लेखक के जो अनुभव हैं वह अद्भुत और मार्मिक हैं। बेटी शिखा और शिवानी के पिलानी के छात्रावास में रहने जाना दोनों दंपति के लिए बहुत भावुक क्षण रहा है। बार-बार तबादले से सभी के जीवन में अस्थिरता आना स्वाभाविक है। वह लिखती हैं : यह है फ़ौज, नहीं है मौज। वाकई में। एक स्थान से दूसरे स्थान पर बसेरा बनाना कितना कष्टकर है इसे केवल एक फ़ौज और उनके परिवार ही जन सकते हैं। थका देनेवाली यह प्रक्रिया सच

में कष्टकर है। अपने अनुभव में लेखिका लिखती हैं, बच्चों के बिना घर, घर नहीं लगता। अब दोनों बच्चे बड़े हो गए हैं और उन्होंने खुद को बाहर अकेले एडजस्ट करना सीख लिया लेकिन हम क्या करें, उनके बिना हमारा समय नहीं कटता। इसी क्रम में एक माँ का करुण पक्ष हमारे सामने आता है जब वह बच्चों के जाने के बाद सूने हुए घर में बहुत रोती हैं। घर का सूनापन, उसमें पसरा सन्नाटा बच्चों की रह-रहकर याद दिलाती हैं। इस खालीपन को, इस गैप को भरने का काम करता है एक छोटा-सा बच्चा 'समर', जो उनके पड़ोस में रहने के लिए आता है। पठानकोट का उनका घर हर तरह से बहुत सुंदर है और समर उसी घर में धीरे-धीरे अपनी जगह बनाना शुरू करता है।

समर के बारे में हर छोटी-से-छोटी और बड़ी-से बड़ी बात लेखिका ने इस संस्मरण में उकेरने का प्रयास किया है। वह एक ऐसा अद्भुत बच्चा था जो हर बात में लेखिका को चौंकाता था। बातों में इतना अनुशासन, इतना ठहराव, इतना नियंत्रण और परिपक्वता जो हर किसी को चौंका दे। लेखिका भी चौंकी, उसके हर जवाब को सुनकर वह हैरान होती और वह बहुत लाजमी भी था। उसकी फरटिदार अंग्रेजी सब को हैरान करती। लेखिका समर के व्यवहार और उसके बारे में हर छोटी-छोटी बात जानना चाहती थीं कि आखिर ये बच्चा इतना सरल मिजाज का क्यों है, क्यों वह एक भी बात का सही से उत्तर नहीं देता, क्यों दो टुक जवाब देकर शांत हो जाता है? इन तमाम सवालों के जवाब ढूंढ रही थीं लेखिका। जो बच्चे घर में प्यार नहीं पाते वे बच्चे शायद समर की तरह ही हो जाते हैं। समय से पहले बूढ़ा और बहुत अधिक परिपक्व। माता-पिता से खुलकर संवाद न कर पाने के कारण बच्चे प्रेम और स्नेह बाहर खोजने लगते हैं, समर के साथ भी यही था। समर का अपने माता-पिता से जो संवाद था वह मानो पूरी तरह से पेशेवर था। समर का अपने पिता से स्टॉक-एक्सचेंज और शेयर मार्केटिंग आदि की बातें करना उसे अपने उम्र से कई गुना अधिक परिपक्व बनाता है। अपने पिता से शेयर मार्केटिंग की बातें करते हुए समर को प्रायः देखा जाता था। वह जितना शांत था उतना ही

शरारती भी।

हमेशा 'हे यू, आई डोन्टलाइक्यू' कहने वाला समर लेखिका के दिल में कब जगह बना गया नहीं मालूम। वह लिखती हैं : संभव है कि शायद उसे यह साथ बिताया हुआ अनमोल समय याद रहे और यह भी याद रहे कि उससे पहले मुझे किसी ने इतनी ईमानदारी से कभी नहीं कहा था, 'आई डोन्टलाइक्यू'। ये पंक्तियाँ लेखिका की भावनात्मक जुड़ाव का प्रमाण है। समर के प्रति उनका असीम प्रेम, स्नेह और आदर है। यह सच है कि बच्चे मन के कोमल और निर्दोष होते हैं। उन्हें जहाँ ममता की छाँव मिलता है उनके कदम उसी ओर अपने-आप भागने लगते हैं। लेखिका का घर भी समर के लिए वही स्थान था जो धीरे-धीरे उसका कंफर्ट ज़ोन बनता गया। अब उसे उसी घर का सब अच्छा लगता। यहाँ तक कि स्कूल के यूनीफॉर्म भी वह वहीं आकर पहनता और लौटने के बाद बदलता भी वहीं। घर जाने की जैसे उसे इच्छा ही ना हो। समर की माँ लेखिका को कहती हैं कि इसे खाने में दही पसंद है तो आप उसके लिए थोड़ा दही ही रख दिया करें, और उसकी हर पसंद-नापसंद का ध्यान रखती हैं लेखिका। एक माँ होने के नाते जो भावनात्मक संबंध एक बच्चे के साथ होना चाहिए, वह सबकुछ यहाँ समर के लिए था। इतना तो शिखा और शिवानी के लिए फिक्क नहीं रहती जितना समर के लिए लेखिका के मन में रहता था। यह देखते हुए भी कि किस प्रकार शिखा और शिवानी की उपस्थिति समर को खटकने लगी थी। उसे हमेशा उनके जाने का इंतज़ार रहता, ताकि उस घर पर और उस घर की सभी खिलौने-कलर पेंसिल इत्यादि सब पर केवल उसका एकक्षत्र राज हो। अकेला बच्चा होने के कारण उसके भीतर बाँटकर खाने और देने की प्रवृत्ति कम होती है, यह भी सच है। उसे जो स्पेस अपने घर में नहीं मिल पाया, उसे वह लेखिका के घर पर पूरा करने की इच्छा रखता। इसका कारण शायद उस बच्चे के भीतर दबा वह अभाव था जिसकी कमी को लेखिका पूरा करना चाहती थीं। वह बच्चा इतना खामोश और बहुत सतर्क तथा कम बोलने वाला क्यों था, इस बात की तह तक शायद लेखिका

पहुँच चुकी थीं। वह बच्चा माता-पिता के भरपूर प्रेम और स्नेह से वंचित था, यह बात वंदना जी को समझने में देर नहीं लगी होगी।

यह सच है कि फौजियों के बच्चों में एक अलग तरह का डिसिप्लीन होता है, सख्ती होती है परंतु एक बच्चे को जितना ममत्व और अटेंशन चाहिए, उतना तो देना ही पड़ता है। ना मिले तो वह बच्चा 'समर' बन जाता है। समर जितना तेज बुद्धिवाला बच्चा था उतना ही समझदार भी। उसे मालूम है कि कहाँ कैसे रहना है और किस चीज़ का कैसे प्रयोग करना है। लेखिका के घर पर रखे हरेक वस्तुओं को वह इस वायदे के साथ छूकर रख देता है कि वह उन्हें केवल देखना चाहता है और कुछ नहीं करेगा और न ही कोई नुकसान पहुँचाएगा उन्हें। बाल मनोविज्ञान कहता है कि जिन बच्चों को माता-पिता का पर्याप्त प्रेम नहीं मिलता और न ही अभिभावक उन्हें पर्याप्त समय देते हैं, ऐसे बच्चों में आक्रामकता, अनिश्चितता, भावनात्मक अस्थिरता, सामाजिक संबंधों में कठिनाई और नकारात्मक आत्म-धारणा की भावनाएं पनपने लगती हैं। बाल मनोवैज्ञानिकों का मानना है कि ऐसे में बच्चों को : प्रेम और समर्थन प्रदान करें, भावनात्मक समर्थन दें और सकारात्मक संबंध बनायें। इन उपायों से बच्चों को प्रेम और समर्थन की कमी के नकारात्मक प्रभावों से बचाया जा सकता है और उन्हें स्वस्थ और संतुलित व्यक्तित्व के साथ विकसित होने में मदद मिल सकती है। बाल मनोविज्ञान के जनक कहे जाने वाले जिन पियाजे ने अपने संज्ञानात्मक सिद्धांत में महत्वपूर्ण निष्कर्ष दिया और बताया कि बच्चे वयस्कों से कम बुद्धिमान नहीं होते-वे बस अलग तरह से सोचते हैं। छोटे बच्चों और बड़े बच्चों की सोच में गुणात्मक और मात्रात्मक दोनों तरह के अंतर होते हैं। अल्बर्ट आइंस्टीन ने जिन पियाजे की खोज को इतना सरल बताया कि केवल कोई प्रतिभाशाली व्यक्ति ही इसके बारे में सोच सकता था।

जिस सोच की बात आइंस्टीन करते हैं वह जिन पियाजे की सैद्धांतिकी का हिस्सा रहा है। वैसे हर वो स्त्री जो माँ है और नहीं भी है तब भी वह बच्चों के मनोविज्ञान

को समझने में सक्षम है। बच्चों का जो व्यवहार है वह एक स्त्री बहुत अच्छे से समझ सकती है। एक शिक्षिका में भी इन बच्चों के व्यवहार को समझने की अद्भुत क्षमता होती है।

समर नामक बच्चे से अलविदा लेने के बाद लेखिका हमें ले जाती हैं अपने गाँव 'स्याणा पोता' और राजस्थान के चूरू में जहाँ पाठक उनके गाँव, खेत-खलिहान, पालतू पशु-पक्षी, नदी-तालाब, काली मिट्टी का भण्डार, पानी की किल्लत, निमोळी, पील्हू और टॉटकी बणी इत्यादि कई स्थानों और फलों के नामों से रू-ब-रू होते हैं। गाँव की राजनीति, भ्रष्टाचार, विकास के नाम पर होने वाली धांधलियाँ, जंगलों की रात में कटाई और ज़मींदारी की ठसक सब देखने को मिलते हैं इस संस्मरण में। पितृसत्ता का दबदबा, स्त्रियों को हमेशा कमतर आँके जाने और उन्हें हमेशा परदे में रहने के लिए विवश होने की कथा; सब कुछ कहता है यह संस्मरण। वंदना जी एक प्रसंग का उल्लेख करते हुए लिखती हैं : गाँव में पर्दा-प्रथा थी जो कमोबेश आज भी जारी है। घर आनेवाले बड़ी उम्र के पुरुषों से मम्मी घूँघट रखती थीं। ऐसे पुरुष दूर पेड़ की छाँव तले बैठकर भी घर में झाँकते रहते थे। उनके लिए एक पढ़ी-लिखी महिला को अपने सामने काम करते देखना, यानी अजूबा देखने जैसा होता। इस ताका-झाँकी से बचने के लिए मम्मी ने एक कोने में बने घर के सामने भी दीवार खिंचवाकर बाउंड्री-वाल बनवा ली थी।

उक्त कथन लेखिका के स्व के अनुभव हैं जो उन्होंने अपने घर पर ही देखा। एक स्त्री का इस प्रकार दीवाल बनवा देना यह दर्शाता है कि यह एक स्त्री की स्वतंत्रता और स्वच्छंदता पर सेंध लगाने जैसा है। अपने ही घर में ऐसी परिस्थिति का पनपना एक स्त्री को असहज वातावरण में रहने के लिए विवश करने के समान है। घूँघट में रहने पर बाध्य करना पुरुष वर्चस्ववादी समाज की एक विकृति है। समानता के मूल्य जब तक स्थापित नहीं होने स्त्रियों के लिए ऐसे दमघोंटू माहौल कायम रहेंगे। आंकड़े बताते हैं कि सर्वाधिक स्त्रियों को दबाकर रखनेवाले राज्यों में राजस्थान, उत्तरप्रदेश, हरियाणा, महाराष्ट्र एवं दिल्ली

आदि अग्रणी भूमिका निभाते आये हैं।

यह संस्मरण अपने आप में विविध आयामों को समेटे हुए है। गाँव-देहातों में आज भी काली मिट्टी से घर को लिपे जाने का रिवाज है, टूटे हुए खपरैल जगहों को इसी मिट्टी से भरा जाता है। काली मिट्टी का प्रयोग बिहार के कुछ ग्रामीण इलाकों में आज भी करते हुए देखा जा सकता है। संस्मरण की प्रासंगिकता इस बात में भी है कि इसमें उन्होंने अपने बचपन की जिस घटना का जिक्र किया है; पेड़ों को रात में काटे जाने का, उस अंश को पढ़ते हुए आपको याद आयेंगे हैदराबाद के कांचागोचीबोवली के वे जंगल, जिन्हें रातों-रात उजाड़ दिए गए और सभी पशु-पक्षी आधी रात को चीखते हुए, करुण आर्त-पुकार करते हुए निकल आये सड़कों पर। उसके बाद राजस्थान के जंगल कटे 'डोल का बाध' और उससे पहले झारखण्ड एवं बिहार के जंगलों को भी उजाड़ दिए गए हैं। जंगल का कटना प्रकृति और पर्यावरण के लिए तो नुकसान दायक है ही उससे भी अधिक घातक परिणाम लानेवाला है मनुष्य जाति के लिए। इस बात का संकेत लेखिका कहीं न कहीं देती हुई दिखलाई पड़ती हैं। नदी-तालाब और जंगलों का लुप्त होना धरती के लिए विनाश लाने का बड़ा संकेत है, इससे मनुष्य को चेतने की ज़रूरत है। प्रकृति है तभी जीवन है।

बहरहाल बचपन सदैव सुखद होता है और निर्भीक भी। लेखिका की बोलडनेसको इस संस्मरण में पाठक सहज ही महसूस कर सकते हैं। कितनी निडर और बहादुर रही हैं वो, इसे पाठक इस पुस्तक को पढ़ते हुए बार-बार अनुभव करते हैं। छोटे कलेवर में ही एक सुन्दर सृजन हुआ है वंदना यादव द्वारा। संस्मरण विधाओं में यह एक नवीन प्रयोग हुआ है इस शीर्षक के माध्यम से, कहना अतिशयोक्ति नहीं। इस पर और भी विस्तार से लिखे जाने की गुंजाइश अभी रहती है। □

सहायक प्राध्यापक, हिन्दी विभाग
शहीद भगत सिंह (सांध्य) महाविद्यालय
शेख सराय-11,
दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली-110017